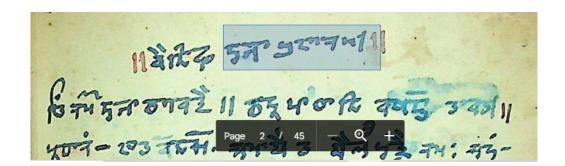
<u>Title: Durga Pujanam</u>

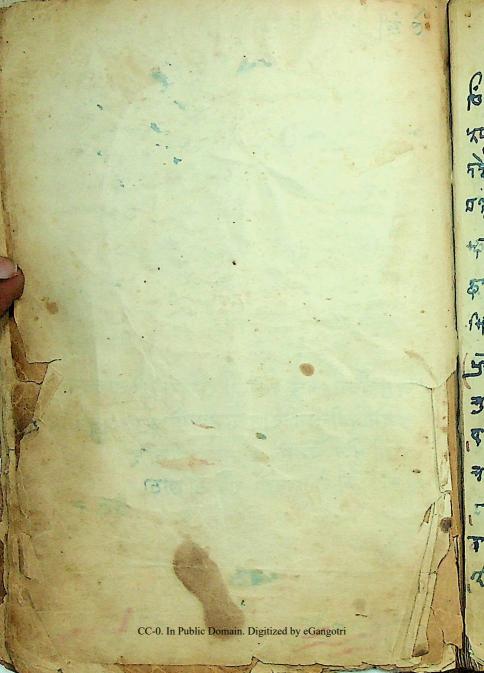


ें बी की नामण्डा के विच्



बतुर्जे नं वन्द्र कला धे क्रारवरं । संशासन स्था धनगामवी तिनी स्। नामां कृषाद्री सह रवड्न धारित एती भेज चेतिस रोज्य दायिनी स् अंदी श्री एकें। हो भगवन्ये राजे दी छाडा

In Public Domain. Digitized by eGangotri



।।वितिक इस अस्मान।।।

िमाइनकावरे।। हर् भंगिर क्यांड उपने।। प्रानं- १९३ वर्षा नाम दे उ दोने परे ना: मरं-मिकि:- मां सम् का का कि नमः महि वर्षभाष्ट्रवे ना भाषासि ज्ञान है नम । सङ्गव-भूतभरेकाः कं गर्ये कृष्ट्यरेकः वर्ष्व-इन्मर्ट्रेनमः निरमेव वाउ मार मिर्द्रेनमः एउवे-भित्रेणे सः अविद्यान प्रवासः ॥ अवदेनक्य ००) विद् में, नेवह • मच उ र ।। मुस्त्रियं नि गयशी रसः ऐवी रसः व्यक्त मं भर्तिः , इसका मंद्र स्था कारती प्रक्ति पर अयभिन्त व्यक्ते नामें व्य निएने में भर्म कह मा प्रा कि मार्ग गानिक एन्ड्रिक्ट बाल मान्ने प्रका उनिह

क्याउन भाग लिं मसी ने हमें हिनों है भारे केराती किरानी भारत करा भीता भी कार्य मार्थे स्थान द्राप्त वा क्रिन करार् एक स्वामे एक ए मेर्ट होते, उन मे व्यवति प्राट एक्ति यक्तरे कृत मी मिक्ये। नमका कार्र रूसः विदेन मिनी प्रेम मिनी मिनी उप मिन्निय किसे मी कार् केस दी भारेभ चुक मा अर्ह मा हिन्यम् असि जना धनाइने द्वित धनी मिन्न करिन स्थान वर भारत क्या निस्ना उत्तरी हं नमः मिरमसुष पूर्ण व राष्ट्रंग मार्डिंग मिन हमल न्यू क उउग्ध उत्तम्मी भन्नभन्छ मिनपामे वर्षा

मियानि यानि उपालि हेनिह विकारि यानि इंटिंड प्रेमिक क्या मुंदा हुन्। अवनीक है, इकाय के, प्यम क्रम गर याने कर्गीय उम्बिक का मन्त्र भदीन डें उसार भवाः इतिश्विष्टः ने हिंदेः भव भूज भवन भव मीज भगविज् हें के भ्रिति ।। देन प्रिय स्मिन् क्राउन सम् किया के निर्मित अस्ति : पान परिपति पाहु. र म्म भरत अक्र मा स्मिथि ने या वर्षा भारति (रही। सह उत्वर्ग भर-गलपा मार्थे उ. सेना के पड़करें मरला भर भाषा मेल पर राम्या प्रत्ने महिन्द्रभेट्र क्ट मर्चे महि भद्रगोरी नवकत हणके भाष्ट्र यहन छ। San Public Domain Digitized by eConcotri

र उद्विष्ट्ये विन्तिनमा सरे श- वनः दिभाषु-१। क्टान्न : अवि : विवर्त : विका कु: प्राथमानक्षित्मः ३ सुक्राण्य वि द्धः ले उनि मृत भूकिम्या १ वर्गी मुद्दे 1 नी क्री क्र जी मि उनः मी : ५ अ मैन पर्वे वि. लक्टें ने उनः मेन परी प्राचित करि मे ज्ञारे ही उनः सम्काल ५.३ कल पहा क्रिकच्चे में उत्रः मिक्र ५३ इन्हें क्ममेर भी उत्रः अमानी ५३ कर भरे वि अम्बे में उत्र हिए यती प्रक दलाहै। ज्ञेष्ठिये थे। उत्रः क्रमण्डी ५३ भड़केटे वि मड्मर में जनः भड़ना ५.३ किन्द्रपट्टी भित्र नके में उत्रः भिद्धिण्यी ५३ वर्षात किस नकु यसने प्रश्नका व्यट : नमय : 3 में मन्त्रहः १ (पाह या विवान) भर गलपी:

(ल्ट्राहे कुलम प्यडमं (५च दमक्षु००) भमनु भूकः गुपु गुपु उर भंभूष्य निकेल निके गर्म तकता गर्म तकता गर्म चिमनी बर संभित्र सी वर्षात्र भम्मु एवर न मुद्देने मी देवी भीहाँ मी म्यू अटणनं (पाद्वायान) क्रम प केरिय पर स्वापं क्रिक्ट हैं किसी। मुभवं - मुद्र भीम भ प्रवृष्टि । शब मुद्रिभे देशे भव बीरामां मुख्या भुद्र भुवे कं वह पमन वल्य भुज्या नमयः उ मेन पृष्टः भाष्ट्र अन्दिक्षणं क्ष्म हैवडनं देनक र नं एरमानं नाः मारे उ मनप्रे ७ क्नम-व्यात : यम् वः अरायाभि महिर्दे : मान्य भन कार्य मार्थ भन्दी १ कता

इवड : जुब्ह विष्टु भि, नुबद्ध दंद हतं. सीमगर अवस्थानि भारेषामा प्रिनी उंग्री भन्दे भनेगाउं दिने महा कर्ता दिन दिनिति विवरे में भर भर् देवी नका ज्ञानी गड़े उल्डिमं ए सुवड्याम का बहिर पह पह महस्मि भूरान भर्त प्रम पता सुर् भूगाय उने भए जुने हुने में सेव हा के हा मन प्रमू ज्यामी, हे हे में भार निर्मित उद्येक कि ट्रा वलांदिक भक्त 53 निचन 53 भ अन्ति किरीन भारेजं नवरि अर्प जंडिव मि उ उन्ने काण र् किर्यु भारति का विस्त पा महिल्ली के गरा उनम भूकरो भेड़िक मद्रालि भव गर्भ नामक बा भार मार्थ गार ने बार हा मार उद्गी हैं। अवन्यपूर्व सेवी नवत्र्यां विक मह कुन

क्ष्यकर हिन्हें, एद मामर भिन्तर भित्रक भित्रक भीरवधी ए ममं उभम वह दाव मीपू भारति दुम जा भीपति। प्पट । किंही बरूप गाँव प्पट मिन निक हव नव-एड्रचन विकि छुँप में 30 भवाए। bवाने रिया हम या उप या मार कि गड न पर भाउनं सम्भा नव महिक भी। स्वाउप धें प्रया नव मृता दिक पराभी, नव का भयी देवी भद्भ अभ क्योगी भी त्याकुष्ट क्षा कर भीतार भारताय हिला ।। हर्दा महास्थान समार्थ नुबाउषाया प्रता मेल प्रता नुका वड ब्लहभन भक्तर मुख्य के दिने प्रना ण्डारेष छड्वलं भिद्दिषं भिव भंपुड्या।। मुना बलं । मंद्रिकं । मुक्तः िस्मेर्ट ब्रिक क्रिम्म सिवर इस ब्ला म्ब्राभन भंगुडमा मुडिट मु ठ अत्र भठय प्रणा। अत्र वन्छ । मुड्नीम् स्व म्यू पाक रिजे कर श्रीमुक्न भान भा अस्ट भिमवं द्विङ पराभा उत्राप भरि एमं अपर्ट विद्विष्ठा भी हैंड-वरं मंद्रम् । अत्र जिल् में में म्यूनिमा श्रिक्यनं का भाषी हतान महय प्रमा हरू भनकु गजा है भड़ है। अधिया भी। मन्ति। भयाभे मुत्र । है।।

स्वा हिन्दं भवर भाउं सुष्ठा भाउंग भाग भाग उंद मिल्लक कितीमा क्षेत्रकर मुत्रेयथा। भा अवः, क्ट मंत्री वास प्रदे भड़त्र का पीयापी इसे उन्ने मिला भरा-का मिल्ल मी कल भंया मिकमा।। भीउवल्या मनम्या । स्व दानगरी मुह वड इक्षवन्त उस भामी मुद्र कुरू निर्मिनी भी हरू भर मंड दें दें भी भवा हला भम्डणा डिक्रवल मडे भूव ।। १॥ सुवः भड़ मेरी हिने प्रमा व्यप्त प्र मिनी भम्म की भम् भिन्ना मिन मिन राज्य क्यानं में प्राधनीया में विक्तिः

सम्भाव का आ अव अवह विकेश भिष्ठिं भाष्ट्रा भड़का भड़का है विक्राधिड मी सिर्देशि में भी हिंदी में स्ट्रांसि में नम कल विष्ठ पर नम कले मु परिणा गत्रवन्तं अवस्था। १। ३३ द क्लमान उन्में भाग्यत्रनि केर्भानं मा एकि हेव हेक्षि भारिका समिति या वर्ष प्रया-मिष्टिम, जबस्वि ५५वड । उग मक विषे मार्किन मार्किन महिन्दी । दिन्ह वता भागानिये भारे पण्य कल्या समा । उ. मेल क्रिक्स देवडहः पट्ट स्था मा।। भर्म मा क्षेत्र - उपर्यं दें हिंहे भाभना सक्रलम

उभर्य क्षिम्य उवार् क्रम्यया म्म, 3, मैन भरि १ क्रम हेब : देन के भये: कि महे रमा।। उपमाय- मुडमवस्न-मन्त्री-वेद्याप्य बेहाचे देवनं देवप्यून मुण्यं दत्त-याभी में उद्गरं मुधि देउद, नमा 3, मैनपर्ट मुक्यनीय नमः॥ भनुभनं॥ मारे पर्य-(परम् प्रित्ति में हे दे में भारत स्त्राम निष्येष उन्दे भर्भनं ध्याम्प्रभा ३३: म्द्रिविमारे भारत ३३: ब्रिन भने। वसे: भीवर भी भ वाकी एक ना: भी रावि भंडे क्षेष्ट्र भारते उन्न करना वृद्धा भूल भंगती नार भिद्रि परन भी तम उचे वर्ष लगहलं हेपा पर्वमा लो : बेर्म किर्हे : मान्य भागमाता - मा रहिते : ००॥ निय मिन केल

मध्यायां भने

नमित्रमा भिद्रजिन् भंयतं धनं व भी कल्पा । निवना क्रीं पड़े मक्रं ह भक्त रें उचे वर क्रेन् मुक्त यक लए देवी भने भूकी डिड :।। भया: भीर अ मक्राकि: 3 पाइसी ह भववाप यं-र्विति। उपन्य उ ॥ उउ: मह महि मार्थाः। प्रभन् क्यन किर्-रिवर्ति मेर उद्देश नि दिवेट: - उपादी व्लंड मह-अक्षा उपरेक क्रियं प्राप्त रहन क्रिके इस्ते मेरे देश वहन: नेमहिंद द्राया रेते या पर मी मा नर भावना उत्ये क्रा दिनी भवत्र हरमें भवंदर हार किन्ना कि भर मय का गरे उर्दे की नमेनमः॥ काळामा - ब्राह्म की करेंगे निष करानं उस महे प्रांत कंत्र पर महाई बाली नकमी हाके।। जभन पहा प्रत्येश-समन्य नमः भर्भन्य नमः र्नेभा भनामं नमा एमेमाम नमा ६ ५३ मना यनमा

क्य नाः, इत्या, दी द्या विमुद्वम् मक्यम् महत्य, नवैग्राम, मनेमुर्य, बाद्रमहल्य मद्भार नाया मा भल्लाय भन्नाय । राम उभन भारत्या क्राया भारत्या, भारत्या प्रारे भान-भेरेष्टः विक्रिति मय क्रमार्डिनमः भाष्ट्र महील क्रीय-उरी दिलिक न्मः नवण्य भिद्रभनाय नभः॥ ्रीय वर्षाण्य हे हिरीय जिल्ला है। हिरीय िरणान् उ से ले हे रा ने इवे।। किसमने उ मिन भिन्द्र में ।दें दुवल प्रदूषन प्रमें नहीं: श्वाभेव विभाष्ट्र इसं वार्गम भी उव किन रहाभी।। वि मक्ति मन्त्रियनं।। वन्तु मुद्रे भूव थि प्रवस्

मयांकं विकित्या भारति भागां उन मछ भवीउकभा नम्भे उ मैन में ९ ॥ मार्गे दे मेरं का नामिया गर्म जार ने ने ने ने क्रुं भगरि भने वस भनः मिल ह भिन्नं प्रनं क्रिनं उस एर्विमिरिकन्ते: अल्येउपमम्मीभ व 3, मेल पट्टे कलम एवउट: देनकिए। सम्मार्व गीर् नमः "निता उनिहर प्रवर्ग प्रभानर भेग्र परिकारी कार्य मार्थ मिलक भरंड हर्प यहन मन्त्रे उ भरके हैं भन्ता भागा में में में में के के के मारे के के मिंद्रमः परंत्रभः विमिन्न पृथ् प्रणा करे मी उ मेमनेर्नाः ह न्यु क्राविस म कर्न-भारत कर महे के कममहे के भरति हैं

भिष्टि हर्डे । जुल्ला रणयाचे । भट्टे । इसमें नम् म निर्मा ६ इन्ययं भ नम्ये ७ जिले हैं मिक्ये उ. सिक्ये ने ज्ञी हरे व. पर्दे क्र म्यु ना हवारे में क्लाम्येन विलायां में भीटे करें। उटे डानकां भाष्ट्र क्रानिये समार्थे भारते भनेत्र परि-मुख्ये मुबर हानेको भिन्म कारेट कर्क है समायाभिये जमकर में भेड़िये, भराउँ दामहर दाउँ अमेररे क्लारे इन्हें मिलमा में इन्हें में इन्हें मिल हैं के भीर कीर मरे जिममें देमके जलकी कनक मरे काडियहे काडिय नी सिहें

SI SI

द्वानिक विष्य मिला है जिले हैं मिला है मिला है ज्यामे जहाँ ज्यापेट भड़तहै। मदेशर भद्र वामक में भद्र भारत भर भरा में भद भीक्ये भद विष्ट्रिय हैव भट्ट हैव विद्यार्थ हैव-五克,可知我。下南阳是,于两时间为:四子的是 म्ति दर्ग में मिन्न भारतमः ।। ज्यं स्वरुतः मान प्राप्ता वनस्ति स्मिन्ने गहिन् थु-भनेता: सम्प्रेय: भन्देरमं प्रियं प्रिकेष्टि-उपन मार्गी । भर ३ मैतर्थे १ वे में प्रम पिक्।। भीपः नगमें उतिका सुप्क्रमें भर रीया भन्र निभाग्यः भन्व वह हुउं हुनि मियं प्रिष्ठापा समये ३ देन पर् छ क्तमरे निक विशेष्ट्र पिक

विष्ट्रांडे क्या न क्यां हल द्रि भीति-भक्षा हम मा के मार हम मार निम्म हम कि निमम हम कि की ला तिते भन्मान लाय उन्हाँ र मिनि सम् इसेक भाई वे क्ष्य सीक क्ष बस्ति है हैंगी व द्विभाषा प्रति स्थानि स्था भाषा भाषा विद्यम संस्टें प्राप्त होड़े एक निर्मा प्रश्रिष्ट रेट निर्दे मिन दाय, टाय केंग्स विष्म ; क्षित प्रमात्रकार होडा प्रमान साम मनि न मिनि द्राय हवानि मचित्र लय मेल-मुंड राय राय भादेन निक्म वसियुक्त के लय लय गर् निमुद्देश हम्मेमारे कर्य लाय भक्ष उक दिन, स्मय जनाउँ द्वांगिल, राय मामारे भाविरे, राय महा वस्ति,

लय हेरि ना भिन्दे। हाय कारि दे राय। राय राय हैनी मैलपरी भाउपि, राय है लाक मेरी होंद्र हैं के निरुद्री लाक द लम् भार भन्न निकार्ड देश द्वार द्वार मित्र अन मंद्रा करी। क्राय व मेन पर् मिरिंदे में हम विविधित में रहे में करें कर कर भन प्र उल्लयने हुन में गु भाद्गी भिष्ठ उभी शाम बाउ हाउ दर गाउल मरकार्त्रा नमा उ मेलपरे ७ कर्नाः उरने- उसक्री. सक्वित भाउभद्रल विस् प्राम विभवा भाइ उट विष्यित भन्न के न्याभित्र मान्ये ३ मेलभी १ महन्त्रमा निर्दे हैं हैं। मुक्त भीम स्ट्रिंग हैं। हैं। उपनाः दीपनाः॥ १०३० वसनाः

एउसे प्येउचे स्ट्राट्स विकि: भव: पि नेकिस् । मार यहने में हिन्द्र पर हिन्द्र पह उ देममार गांत हिं प्रमान संस्क्रमा पाइक अन्य मंड गड़ ने मम भिद्र्य क्ला कि हे वेदि निर्मेष्ठ कुपण, दल गड़ल महु निर्माल दिकं परमा उत्तल गत्र मामन् नगवन्नी प्रमेद्र अभी भाषमृद्धिकं दिव गढरल भमासमूच मार्थे उ मैल भी के मार्थ के कि के मिल कि का मार्थ मार्थ के मार्थ के का मार्थ के मार्य के मार्थ के मार्य के मार्थ के मार् म्मे मेर्ड स्वियापिनम् गा ज्ञामण्ड्रितः -ल्डे अर्डे, ट्याहिक स सहिए प्राचल मन भव प्रदाप्त निम्म मृत एए ल का पेंद्र ए 可吃到了, 好不久 不同的一下到了一 क्त उटारे पपनि इन इन्डाउनिय उनि भवाभि गर्डि भर कोर्डि भवर्॥ मर्चेड

मनपुर प्रकिल्या. नमस्य:- एउकेमें-मिनि दिवे भवर्ष द्रभगणन् नेकमः क्रांसी. प्रभम गाउलपुद्ध संयुक्ति।। सूत्र नमः ९ (इहि इक्ति अर्ग विकास विकास मर्पे महन्य: - महुराडी - समिष कित्विष निक्रांते अचकिति के के उरा उराद्वारामा वंग वर्षि मिन्ने हैं मिया में देर मही है विडिल हती है दान्यका मी दम्भ मारी भाला भन् गरी कल रहेरान नेर ब्यु का नंत र ला। त्रम भप्रमडी ५० भई त्यः। न्य उद्या -मार्गेरेड भाषक देव मद भवव ए प्रमान, इन्डेड. मभी, इनुडेक भरूउद, दिन्द्र तथ भन्नी।इद्र-विषेश मिट्टा म्ड्रास् मार्ट्स न वर्ड मेप्पू भर वामक एन्डाइव, क्रियो भगहर्व,

मिल्म भनेयाँ दम्भन । सव भ्य कय वन वर मुस्ट्र मकल मिनमा, कर ले मित्र जालारी हमेल रहमीर मंद्रामार क्ष्म भाष उप्पाने भव भहर विभन्नि, सक्षाने प्रे प्राजन भी दे करी, नेन विष्य भनन भक्ष्य भग्ण उत्ते भग भुक्ष विश्वष्ट भिष्टिति पद्मबद्धायाभेउ किति रूपेल (हर्व भराष्ट्रेन) नकल भर भम्हिन प्रि मिक्य ममलगाउदी ना भाग्यल (से ए डि मर् अपुरिडम, तम की मक, कवण लिर्भा भारे उन भयमा मण्य हमर्बे स्व इन उद्देश देन उद्गिम उद्गीरेन म स्थिती मुनाने दुन्य पा कुं सम्महिन भने भे छे-

ig.

3

4,

11: ディ子がいがらいい

((33: मान्यम् अवसीवह भागतिवक एवसे-रितिकत समक भवन भजाएमन ने सम्पर्णे हेन्य के सम्भ की उन है। निर्भाष मद्भी मुर्देशी। समस मद्भी-करा मक महिद्वरा भक्त ना भम सी-ट्यारम प्राप्त भक्ष हिंगाने भक्षेत्र हल-वाने प्राम् कम मेन प्राचि प्रभाग भिद्रि-मा सी भड़काली, भड़ लही। भड़ भारचुड़ी -दिवड भीटो क्वाइनम क्वीमक पण्नेक्टम रम् अचक नकक भर् भेड्राम् राभ रहन उस भवनानं सी मार्भ भग्रमहः भवं कृति॥ ण्डी भाउम्हः प्रति भन्न नग्ला गाउँ दि भन् पन्न विष्यः भारति माउभारत्ये माउ मान्या मुन्दे । स्वार्थः भारति स्वार्थः स्वर्थः स्वार्थः स्वार्थः स्वर्थः स्वर्यः स्वर्थः स्वर्यः स्वर्यः स्वर्यः स्वर्थः स्वर्थः स्वर्यः स्

प्रि भर्के भवसूत्र िटारे भर् विकित्मः भागार मा प्रात्तां नव प्रात्ती पिकीस्या स्म-भाग्याक नव प्रकार मिर्डेड विसेष: क्राकारिया))। ग्राम् असक मान प्रान प्रमें क्रामें काली। विक प्रवेशः॥ ३३: ५०:॥ ३३ वेच प्रारिकं भने। अवक, निर्द - उड़: स्म प्रदाल - प्रारेभकं, महिडि्म् न धारमाम् प्राम्यनि मन् न्यू मर मर्खराल- सुद्धनं ।। मी सुद्देल उरलमा ।। उभिवन्ताभाति विसल्पनमा।। विभिविकीधिने। कालावल महीम नारे विभागिष्ट प्यः भारे उ मभुवचेद्य ग्राह्म अल्ले हक्या।। 33: कारप्रम मक्ति भने विकित् विविष्: भीति नि मितिए! हर भड़ी मड़ावडि नहिनः प्रभाग्ये भिरुष भरुष्ट नमडं हरामु मितिंह हर्ने नहें भए

-

7

11

F

141

JA.

हत्त्र न ग्राद्धां की कावती हत्त्व पे मेड किया। 33! क्रमणी छा। इक्का के समारं त्रीके मेरे अपरीपः - क्येम् नत्य-न्यानी पार प्रमानं महत्रकां सपक हिनेदं ज्ञानी प्रधान मं, कृष्टि

प्रक्रिम मह्माय केंद्र बहुका भ पात्रियं पर क्रांच क्याह का मार्च द्वा क्रांच नह य वेमारे पेक लक्ष्य दिशाय एक्षेत् नम्य मह्मां नमन यह

STEP IN

ब्रिकार्य - रियम रियम एमं रिवत द्वन ज्ञाधालीया हैलें हे विदेश प्रती दियाने प्रतान-युत्रमी।।शावयुग्न कलाने,क कला अरें क्रिष्ट हिंद में मिक्सी क्रमा क्रमानी मिंड करामे प्रतामा भी का कार में मिलाहे गुला मड़कार्ड सा विद्वार नाउ मित्रक लही निर्म प्रत्यम्प्रभामा क्षेत्र भड़ - क्ष्मणां मुह मडें क्षान्त-स्थाति क्रमण्ड क्रमण देश क्रांत्र प्रत्य भाषा। क्टरियी - क्रियीं यक्षतक यस नस तक प्रमीमा तत्वाम मर देश विभिक् वस विस्थाना।।।।। कलगरी - भग नदकर मड पक-

रिव नमस्तु अभी भवकु अधि के लही मन्द्रवी प्रदायप्रमा।।।। भारतारी-प्रतम प्रश्न कर हव प्रः पा विकासिनी भी प्रायमि भए कही कृत भनि न मिनीभ ॥३॥ भिह्ने छ । चर्म स्कर् भाव मेहर प्राथनीमा भूकर राजनी स्वी सहह प्रधाय भेड़ा भी। १०॥ लिया है स्मार्थ है। सार्वे कर भान रोज गर्रे: ५दें: ४क् हें हैं वर्षे गुरु में गीय।। 33 र अवाहि भाषी भुउग-मिन्ने कर भारे हिंदी दिस्त लि

भवेज भरे लक्टा हिंदी से हं इस में नाः मिलि हिंगे शेषे कें कें हैं हैं शिहि मेन भी तमा।। लवं प्रवेदिनं मुं सु नम इताया में मुख्या। अवव, ववर् मकेर्व -उत्रे भीय-भद्रकाय साः एक्स-हिंदी मद्राय रमः , इस इस हिसी क्षा निर्य म्ब्रम्म हिले विकालकर्यः। दक्त पत्ती हिंसी: क्रालय नमः। इस एक्टीन हिंसी: क्य यस माः। एक राष्ट्र में हिने दुनव माः। म्म उन्ने हिंसी सम्यानमः। एक पण्-हिसी ७२उ परभः। इसदेश - विकास ि मिन्भाषात्मः। भाष्यं अने ि मेलभेडेत्म वभंगे मारामे नमः। वमकुल हमला हैना। ग्भार्त्र निक्रव मी द्वार्य नभः वाम महा भद्द वेंडन

हारे, एस्के मः। जकी नगुक्यां मः। नके मारिकारी नमः। काम एत्रान वीपदे नमः। क्भराष्ट्रया उदेत्यः। क्भग्रन्ति गरा भउदे काः वभभार विभिन्नदे नमः। वभद्रित हुवाने मुद्रम भन्ता भवर। युद्धे नमः। बैक्क हैन्यः। महिन दिभन्देनभः। स्मारिण्डाचिमः। द्रमहिनभः। मारितं नमः अने निर्माशा लिते गत्रा का मिंग्रहें उर नेतर दिवेश भारत भारत अलन नैकहं निके हिलामिस विही ही ए हि दिराण्य प्रतिभाग भड़िया विभागारी एक जम्मी प्रथ

करिकं अरावेड्ड क्ट मार ५५एका विकेष हिंगुल हिंगुल किया परंत न्वक उ मा नविक्रकेंड कुमि, मेमुरं भिगुल नण एक राष्ट्र महिन्म महिन द्वा महिंग लक्का उस्ता प्रथम के विक्रामें गत्र भव द का भीनं भी अर्थे न विद्य दिवस कर भार दम वह वारे रूप मलायान्य करते, यारायं प विषयः। वर्ष उ हरेड ली भगवह उ विभिक् मि वह मार्थि उ इस प्र नवर्ग भूड ह

समक्ष्माभूमाद्वेष प्रहार हेन्द्र वहः मिन्ध्य ज जरति विकित्रक दमप्त मेर्ट् मेरामुद्दे एसी एस दिवर्गीत प्रचमहत्रंद्र जुमा १ ५ मद्र ३: काइने मेंव वस्म गर भर कड़ शिकः नन विण्डे के कि हैं। हिंद में मुस्मिश कि हैं। दीना एक दी मद्दी विमीन ज्ञासकर ल्ट्रे केकी कुलं जिल्ले उत्ति वाली। भंद्रोता निर्मानी करं पर्णे विद्यापा गर

किमनी अभूरती अज्ञेष रूल विलिए भागवंग भग्नुउं कर्ट भट्य पराचे आ रायुली भवक्यन हाया रूप रामराभी ब्युली क्रार्य वेष्ट मुर्ड व ज्तिहराः यस्मी उभमी वार्ध प्रसूत्र चीन वांतड धराने भन बले में प्रह मेरा दियी। मरक्ष हत्यहं हुनी स्वरं तर्मात्र प्रभाग (८१३ भन्न न उर्वेन ना। अन्ति भागी भिष्टिते॥ निक्तं निक्रास्थ सम स्टार्श- विदेशिय

महम्भ भिष्य भर्:

भूभवं अन्न महुद्द भूम निर्ण उउ: प्रमी भूम क्रिण उउ: कुमं उमं बम्हव भ्रह्मा कि चित्रं उठ: पष्ट्र में से बिर्ण के िसे ९ त्री १ के ९ क्रिय में द्य उद्योक्त सुद्ध ०.३। यहिङ्ग मंड एप पहुंद्र प्रमंडी क्ष्येजा। यन्त्र ५ ५०३

मारिम कियानेन सिक सिक रूप गाउँभी, मारिक क्रांग महें, दिने बाउर न क्रांगेश में प्रस्ट क्रांग महा प्रतिक के मेंद्र हार मारिक भाउने हार प्राप्त क्रांग क्रांग मारिक क्रांग नित्र भारेश मारिस मार्थ भारत मारिक मारिक मारिस मारिस

नच मत्य प्रमाप्ताः

मह एके गर मले। एपं भीभ मनके इस्ट्री हामिं। पर्न रही दम वक्कमा उभसी मामंत्र निषि, भर कली इमिर्द्र्क्य भारत व क्यानं राज्य मार जिलम में यह पर् छा: जिल्हा एतं माने भीभ उष मिटके धामक लक्ष मान्द्र म अनकर्ष भम स्टाननं केंद्र, दाउने लिका प्रमा पद्भिक्टे पद नकी हल भारवमारिनीप भक्ष मन हमाप्त भन्न छनः मान् एठडी भुसलं निभ हैं वे निभी भरमुक्या। ए। डेड्डि भारतीय करेड के भारती दे प्राप्त के प्राप्त के प्राप्त करेड़

भीवा जान द्वा खाई वर्षे प्रसिद्ध भीवित हत्या। मार्ट दिनयन भिरानं मिलिशि में अप पहली भवा कि वारी पाइका मार्स हावंशी द्वीर द्वाप उद्दासक विक इति भनत मित्य क्रिके उद्धारिती उ म्प्रमुद्ध नेरं विविष्णी नम दि दिनी यन कृष्टम उनप्रस्ट मा मप्र स्काम ब्राम र जर वर भित्र भन्न द्वापित करने मार अनुष्ट हुम् विष्यमुर भेष्रज्ञ, कमीर ब्रायिक भिनी भी. विह भी वर्ग वर मगरे बहि विनी भी किंद् चिष्ठ वरने, मित्र मित्र अर्थे। किया दिनयमें महिलेमी क अला भेडी सम्बद्धाः सम्बद्धाः THE TYPE TO BOTH POPULIE BOTH DESCRIPTION OF THE POPULIE BOTH

हिया जिस्त उभारा त्वला या सह वर्ष यड य नी ए ना बा इस भिन्ने उका य हैं। भारा भनः यं रहा देउ महर द्याउि : इ-है: भए विकार भ भ भा भा भाषा हा। वरी, निमा एष्ट्राप्ट ।। सी भवारन मिनि हाल वभ हका सर भिक्र भना लानित जाउना भिने नाम मूजा बली मेठन जरकी नियन भसक कर भस्क भनक रग्रें वा वा नियुष्ट वा वा देलें ड भड़ किल्मी 311 होहेड्डा रहति। स्वति भाभि भयी मक्तभन रणने दसने कने भन् भिरम्भि म सक प्रस्के मार्गाल, क भार भारत भारत भारत वर्ण वडी ये विष

CG0. In Public Domain, Digitized by eGangotti

भीवा जा द्या अर्थ रूपं ग्राह्म महिन हण्या मर्ड दिनयन निर्मान मिलिन पुर पहरूम भवा कि वंडी पा कले मार्स हमवंडी द्वीर द्वीर उद्दानक विक इति भनल मित्य किट उटारिसी उ म्प्रमुद्ध नेरं विविष्णि नम दि दिनी यन क्राम उनप्रशास्त्र मार्थ मार्थ मार्थ मार्थ मार्थ नर भिन्न भन्न देशकी करते ने के ने निहासी विष्यम् भेपात्रं कमीर कृषिकामिनीमा. विष्ट भी न से बहे मार्ट बाह्र बावे से भी में किन्न विश्व वरन मित्र मिन्न मिन्न किया दिनयमें मिलिमी के अपनी म्ब्राम् स्ट्राह्म सम्बर्ध THE TYPE TO STATE OF STATE OF STATE OF THE PUBLIC BOMAIN. Digitized by eGangotri

रिय जारत उपादन एवल, म जूद वर्ष बड़ य बीण बर इस भी से उकर य हैंड मन्यनः यत्रनः इउ महा द्वारितः ए-ते: भए विश्व भ भ भा भा भाषा है। वडी, निमान छन् एए ।। सी भन्न पन मिर्डि हाल वर्ग, इक्त रिंग भित्रक, भाना निया भारत कर महा वर्ष मिना रग्रं वी वहनाश्रुटा वभी या हैलेंडे भड़ किल्मी 311 क्रीहेड्ज एउति : म्हिल् भाभ भयी मक्त भन्न दणन दस्ते केन भन्न भिडमीभ म सके भुसके माधाली के भार असम मही मिल भार्थि महिल हम TO CO. In Public Domain, Digifized by a Gangon

भारत्मिक वा वी वी असक कार्य भाग निक्ता क्रिक्ट मिर्ग अस्ति निक्ता ० क्मी अपन देवी कमी भी विभानी इन्हें प्रज्य दिन विद्यान म स्तिन भारतिहारके यार केमान शिक्षा विष्टारं किति भी कित कर में भर नम्भियभिनी नम निपं लहु अ अवल हरनी किय भड़ाप निचापार गुग ननण्य उन र्व विणा भा पार उट ट्यार विशे नीण भन्नक क्षिम महबार एक ने कर नह दम्स्तिक भानिकं विरुप्ते । मस् भन्ये किर निय प्रमामी कार्वे वृद्धि पर मारामा सिन मी हुउ करि, प्रता कुल में निक्रल निन्ति में, भण्य भण्डे, मालू भित का उनके, किन्निये उठ उप, इन क्रेडि प्रता , दिगा किकिन, मा वन्ति का क्रिक क्रिक प्रमाप, भाकितिक 有一种主义 文州下川

4

CC-0. In Public Domain. Digitized by eGangotri

बुलारं कारणालीत स्व श्रह्मानय निभेरम् नमानि परमे प्रान, सम्बन्द् वीर नायकर्। केलार कियार हो देव देवं जगद्भ है, अम्छ अणता देवी, भेर्यं विगता मया अदियी-जवाब मायाधित सर्वेषु सम्माल्याने इन स्वे किडा महरणे, स्की थि विने वारणम्, समग्रे लड़, ने धोरे। जपादेव विमादन । भेगा मार डरे) एक हिदि प्रलावस्य। स्तानामान अभ्याने, मा पालके नामि में मद्में पातक हिना नन्पाद नेप पात काधिकं वाचिकं वेव, मानहं स्पन्न देश जन्य । आ दिन्तुमा वामि एक त जान्यन भुस्पति। यागारमे व न्ते पाठेत्यं प्रयत्ततः। नित्यं त्रेभिनिकं कार्ये, परस्या च्यात्मना भेवः निक्यु द्वरण ने कि । वस् भारित अहा विराधित अह या के विक्रेषतः। मन न दोने में विहोन मण बसने विधिहीने हमादेचा वर्षे किस नामः परति मंत्री नामः परति । शानः विचारः कार्यने हम्मर अति है। मान्यायन है। विचार विचारा विचारा प्रज्ञाय विचारा वि

होभाग वर्धनं स्वयान भिनं छण्य श्राप्त वाहना मिये।। अस्य भी बहुरूप गर्भ मंत्रस्य वाम देव -मापि: , अनुखम् खुन्ः , भी पर्तेश्वर सकल भटारका देवता अलमें। वाड.मनः का मा पार्नित माम निवार णांथे, मना कामना किरयंथे, पांठ विनियामा ॥ध्यानं॥ वामे खेटक माम्य मार्ग विक्षा रेण्डं च बीणा किने। विभाग ध्या इद्वरी ल निभने की कुटार की रही खा तक पा कर लेख -उम्ह वज नियाल भयं हडस्य प्रार वक मिनु अवलं छक्चन्य नाथ छामः॥ बङ क्षण्य विद्राहे। ार राज्य चीमारि। तनी अघार: प्रचीर्यात् ३ खबारेभ्या ख बोरभ्या द्यार द्यार नरे ध्यश्व तिः पार्व हर्वभया नमस्त हड रामिन्यः ६०८ विच नयन देवं जटा मुक्त मंहितं । वन् के हि इती का की म्पर्क के प्रवंश पंच वक् विमाला हो, हर्ष गोणा समाणितस् थ्कै: ग्राप्ते विद्यानितं क्याल मालाभरण। वेटक धारिनं, पार्याङ्कप्राध्ये देवं । प्रार हारी विनाकिन्य, तभयहरू में अंड खर्नाम थारियां। बीका डम्र हिंच च घंटा हरू ्तिनं यज्ञ दं इन्ता दोष् । पहा छ य हस्त । सन्देश विविश्व गान में विधानने हिंद वर्ष मध्याने होन वर्षनारी महाया देश है। नील को लेन स्था के महिमारि कार्म विवास के महिमारि कार्म विवास के महिमारि कार्म विवास के महिमारि कार्म विवास के महिमारि कार्म के के महिमारि कार्म के महिमारि कार्म के महिमारिक के महिमारि नियान्। वामं देव विविन्तयत्। दादिमे क्रसमें अख्य

ई क्रमादक सिन्ममा, ने खार्च प्रतीकामा, पश्चिम तु विविन्नियम् छाह स् भेर देव हार काम कर परम रियायेडे यह अकात्मा, सिर्य हिन्यति मानवः प्रवेदाल प्रा खाना हाया प्राहितना बाह्मी भेरवं भूमं तर्ग ताहमा मवि भेरवं मूजा वित्वा त तरीत्संग गता स्वयत ईपात् द्रशास वरना गमीर विष्ठती । मुलाम इसलासी स्टा आयेत् भेरवं विस्तित्सणम् सन् क्या की न ने स्पर्ट ता पर बसा महिंची दित्सक् पिणीन ब्रह्मादि कारणातीन परानय मधी भित्रकाम ततः बरम दीजन स्थितं परम् करणम् सुप्रानं निकलं भुद्दं नेनः हवी श्रिपं भजे विकेषम विक्वरत्पारमा विक्व हनादि कारणे पर उनाप्रा उद्यं तुमा सुन्ध्य भेरवम्॥ जिनमः प्रिमाय॥ 🔆 ओ लमः प्रमा काषा, प्राथिते महमत्येते । भिराया परल माना निरानय परायते अवाव्यामा प्रमी अनाने विश्व हत्ये। महासामान्य प्रपा लतः मार्चेक रामिणे। ग्रावादि दपाश वान वामाय प्राम् व नमः प्राने द्यायदि मंत्र स्ट्रिम मार्थि। देवते ह विस्तर्भ छम प्रेच विसाधिन। तमः भाग पाणे नमस्य । क्रालेशे प्रिक्ता इय निर्दल काद्याग एउ लाधित ने In Public Domain. Digitized by eGangotri

थारत प्रस्त प्रसाम, विस्ति। विस ग जनते नमा माया स्वरत्माय स्थानवे क्ते परमिष्टिने बार संसार संभग ोचा सर्वश त्यश्र स्तोत्र तथा सर्व कारण कलाम किल्यों लास संकल समाधि विष्य छात् का क ाला मेश्व नद संस्थिता मापि त्वा ज्यामि दिवाव-गज विश्वमा प्रजाम (-1) न्व जनु ह्रयान मंडला इत भाव देवत भवानर दियंता त्वा ब्रोगिम दिन व्या अना ्रेन्ड्रभा मजाम् (2) विष्ठाः विख

CC-0. In Public Domain. Digitized by eGangotri

ति प्रदातव्यं न देयं परदीक्षिते ।। पश्नां सिन्नधौ देवि नोबार्यं सर्वथा क्रचित् । अस्यैव स्मृतमात्रस्य विद्या नर्यन्ति सर्वशः ॥ गुद्धका यातुधानाश्च वेताला राक्षसादयः । डाकि-नथ पिशाचाश्च क्र्रसलाश्च पूतनाः ॥ नर्यन्त सर्वे पिठत-तोत्रसास्य प्रभावतः । खेचरी भूचरी चैव डाकिनी शाकिनी नथा ॥ ये चान्ये बहुधा भूता दुष्टसच्या भयानकाः । व्याधि-तौर्भिक्षदौर्भाग्यमारीमोहविषादयः ॥ गजव्याघादयो भीताः गलायन्ते दिशो दश् । सर्वे दुष्टाः प्रणञ्यन्ति चेत्याज्ञा पार-गलायन्ते दिशो दश् । सर्वे दुष्टाः प्रणञ्यन्ति चेत्याज्ञा पार-गला सम्पूर्णः ॥

अथ साम्बसदाशिवकवचस्तोत्रम्॥

अस्य श्रीसाम्बसदाशिवकवचराजस्य, ऋषभयोगिश्वर ऋषिः, अनुष्टुप्च्छन्दः श्रीसाम्बसदाशिवो देवता, ॐबीजं, नमः शक्तिः, शिवायेति कीलकं, श्रीसाम्बसदाशिवप्रीत्यर्थे पाठे विनियोगः ॥ ॐ अङ्गुष्ट्राम्यां नमः, न तर्जनीभ्यां नमः, मः मध्यमाभ्यां नमः, शि अनामिकाभ्यां नमः वा कनिष्टकाभ्यां नमः, य करतलकर्ष्ट्राम्यां नमः ॥ ॐ हृद्याय नमः, न शिरसे खाहा, मः शिखाये वपद, शि कवचाय हुँ, वा नेत्राभ्यां वापद, य शिखाये वपद, शि कवचाय हुँ, वा नेत्राभ्यां वापद, य शिखाये वपद, शि कवचाय हुँ, वा नेत्राभ्यां वापद, य शिखाये वपद, शि कवचाय हुँ, वा नेत्राभ्यां वापद, य शिखाये वपद, शि कवचाय हुँ, वा नेत्राभ्यां वापद, य शिखाये वपद, शि कवचाय हुँ, वा नेत्राभ्यां वापद, य शिखाये वपद, शि कवचाय हुँ, वा नेत्राभ्यां वापद, य शिखाये वपद, शि कवचाय हुँ, वा नेत्राभ्यां वापद, य शिकाये पर्यामां वापद, य करतलका नेत्राम्यां वापद, य शिकाये विश्व विश